सुखकर्ता दुःखहर्ता

Sukhkarta Dukhharta Ganesh Aarti • आरती • देवनागरी

सुखकर्ता दुःखहर्ता वार्ता विघ्नाची।
नुरवी पुरवी प्रेम कृपा जयाची।
सर्वांगी सुंदर उटी शेंदुराची।
कंठी झळके माळ मुक्ताफळांची॥१॥

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती॥ध्रु०॥

रत्नखचित फरा तुज गौरीकुमरा।
चंदनाची उटी कुंकुमकेशरा।
हिरेजडित मुकुट शोभतो बरा।
रुणझुणती नूपुरे चरणी घागरिया॥२॥

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती॥

लंबोदर पीतांबर फणिवरबंधना।
सरळ सोंड वक्रतुंड त्रिनयना।
दास रामाचा वाट पाहे सदना।
संकटी पावावे निर्वाणी रक्षावे सुरवरवंदना॥३॥

जय देव जय देव जय मंगलमूर्ती।
दर्शनमात्रे मनकामना पुरती॥

रचना / पाठ-परंपरा: समर्थ रामदास; पारंपरिक मराठी गणेश आरती पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।